ISSN : 2347-7660 (Print) | ISSN : 2454-1818 (Online)

कौटिल्य और मैकियावली का तुलनात्मक विश्लेषण

डॉ0 प्रभा गौतम,

एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, विद्यान्त हिन्दू पी0जी0 कॉलेज, लखनऊ, उ0प्र0

शोध सारांश

कौटिल्य और मैकियावली द्वारा अपनी समकालीन परिस्थितियों से प्रेरित होकर राज्य शिल्प, राज्य की सुरक्षा, राजा के गुणों, राज्य के विस्तार से सम्बन्धित विचारों को राजनीतिक चिन्तन को प्रदान किया है। दोनों विचारक राज्य को साध्य मानते हुए उसके लक्ष्यों की पूर्ति के लिए नैतिकता के सभी नियमों का परित्याग करते हुए, येन–केन– प्रकारेण राज्य के हितों की पूर्ति पर बल देते हैं। मैकियावली द्वारा राज्य के सैद्धान्तिक पक्ष के विवेचन पर बल न देकर राज्यशिल्प पर अधिक बल दिया गया है। मैकियावली राज्य की सुदृढ़ता एवं सुरक्षा को लेकर राज्य पर कोई नैतिक बन्धन आरोपित नहीं करता है, लेकिन कौटिल्य ने धर्म व नैतिकता से बहुत अधिक दूरी नहीं बनायी है, धर्म को कौटिल्य ने समाज का आधार माना है एवं अर्थ को राजनीति का, लेकिन मैकियावली द्वारा धर्म के वर्चस्व को किसी भी क्षेत्र में स्वीकार नहीं किया गया है। मैकियावली के चिन्तन का केन्द्रबिन्दु शक्ति का उपार्जन, संरक्षण और विस्तार है, जबकि कौटिल्य का विचार चिन्तन जीवन के प्रत्येक पक्ष तक विस्तृत हैं।

मुख्य शब्द – *कौटिल्य, मैकियावली, राज्य, राजा, शक्ति*

भारत के राजनीतिक चिन्तक कौटिल्य एवं इटली के फ्लोरेंस निवासी मैकियावली के विचार दर्शन को लेकर दोनों राजविज्ञानियों की तुलना की जाती है। राज्य की उत्पत्ति, राज्य व राजा के कार्य, राजा के गुणों, विदेश नीति, युद्धनीति, युद्ध की आवश्यकता, गुप्तचर व्यवस्था, लक्ष्य प्राप्ति के लिए राज्य द्वारा प्रयुक्त साधन, राज्यनीति, नैतिकता आदि की दृष्टि से दोनों के विचारों में कुछ साम्यता परिलक्षित होती है। इसी दृष्टि से विचारक कौटिल्य को भारत का मैकियावली व मैकियावली को इटली का कौटिल्य की उपाधि से विभूषित करते हैं, कुछ पाश्चात्य राजनीतिक विचारक कौटिल्य को मैकियावली का अग्रदूत मानकर उसकी तुलना मैकियावली से करते हैं। दोनों विचारकों के विचारों के मध्य साम्यता और असाम्यता के विश्लेषण से पूर्व दोनों के विभिन्न विषयों पर विचारों का संक्षिप्त अवलोकन आवश्यक है।

कौटिल्य के नाम, जन्मस्थान और रचना को लेकर अनेक मत प्रचलित हैं, वह विष्णुगुप्त और चाणक्य नाम से भी प्रसिद्ध है। कौटिल्य भारतीय इतिहास में नन्द वंश का विनाश कर मौर्य साम्राज्य, जिसकी राजधानी पाटलिपुत्र में थी, की स्थापना कर एकीकृत भारत की स्थापना में अपने योगदान के लिए प्रसिद्ध हैं। मौर्य वंश की स्थापना के पश्चात् वह चन्द्रगुप्त मौर्य के महामंत्री रहे, तभी उन्होंने अपनी विश्वप्रसिद्ध पुस्तक 'अर्थशास्त्र' की रचना की। कौटिल्य द्वारा रचित 'अर्थशास्त्र' का नामकरण भी एक प्रश्न है कि राजशास्त्र से सम्बन्धित ग्रन्थ का नामकरण 'अर्थशास्त्र' क्यों? कौटिल्य के मतानुसार मनुष्य की वृति (जीविका) को 'अर्थ' कहते हैं। वह

मनुष्यवती (मनुष्यों से बनी हुई) भूमि को भी अर्थ ही मानते हैं, इसलिए मनुष्यवती भूमि के लाभ और उसके पालन करने के उपायों का वर्णन इसमें किया गया है, साथ ही मनुष्यवती भूमि को प्राप्त करने और इस भूमि के निवासियों का पालन–पोषण करने के उपायों एवं सम्यक् साधनों का ज्ञान देना इस शास्त्र का उद्देश्य है। इस प्रकार अर्थशास्त्र वह संहिता है जिसमें भूमि अर्जित करने और उसकी अभिवृद्धि करने के उपायों का निरूपण किया गया है।

कौटिल्य द्वारा राज्य को एक मानवकृत संस्था माना गया है। राज्य की उत्पत्ति के सम्बन्ध में एक प्रसंग में कौटिल्य ने अपने विचार व्यक्त किये हैं– पूर्व काल में एक ऐसा युग था जब प्राणियों में मत्स्य न्याय का प्राबल्य था, शक्ति ही अधिकार है, का सिद्धान्त कार्यकारी था। इस मत्स्य न्याय से दुःखी मानवों ने विवस्वान के पुत्र मनु को अपना राजा स्वीकार किया। कौटिल्य राष्ट्र को सर्वोच्च मानते हैं, इस दृष्टि से राष्ट्र स्वयं में ही उद्देश्य है, लेकिन कौटिल्य व्यक्तियों के हितों को राज्य में समाहित नहीं करता है। कौटिल्य द्वारा राज्य के सावयवी स्वरूप को स्वीकार कर राज्य के सप्तांग द्वारा राज्य के निर्माण को स्वीकार किया गया है, यह सप्तांग है, राजा, अमात्य, जनपद, दुर्ग, कोष, दण्ड और मित्र। कौटिल्य ने राजा को जनता का 'भर्त्य' सेवक कहा है एवं राज्य को साध्य माना है, राज्य का हित सर्वोपरि है, चाहे इसके लिए नैतिकता के सिद्धान्तों को तिलांजलि ही क्यों ना देनी पड़े। राजा को कौटिल्य ने राज्य का सर्वोच्च पदाधिकारी स्वीकार किया है, वह दण्ड शक्ति का प्रतीक है। राजा में कौटिल्य ने अनेक शारीरिक, आत्मिक, बौद्धिक, मानसिक योग्यताओं एवं गुणों की अपेक्षा की हैं। कौटिल्य द्वारा राजा को विभिन्न पशु–पक्षियों से उनके प्राकृतिक गुणों को ग्रहित करने का सुझाव दिया गया है, यथा सिंह से आक्रमण से पूर्व आक्रमण की तैयारी (आंकलन), बगुले से इन्द्रियों का संयम, कुक्कुट से समय पर जागना, सहयोगियों में बाँटना, शत्रु पर आक्रमण, कुत्ते से ज्यादा की आकांक्षा व कम में सन्तुष्टि, गन्दर्भ से थकने के बाद भी बोझ का वहन व अपने श्रम के फल से सन्तुष्टि का भाव, कौए से क्रियाकलापों को गुप्त रखना, शिकार को सही समय पर पकड़ना, अविश्वास एवं आलस्य न करना। कौटिल्य का विचार था कि कुशल शासक इन नीतियों पर चलकर हमेशा अपराजेय रहेगा। इसके अतिरिक्त राजा को राज्य के दैवीय आपदाओं के निराकरण, वाह्य आक्रमण, राज्य की आन्तरिक सुरक्षा एवं न्याय की व्यवस्था व मनुष्यों के आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, पारिवारिक, व्यापारिक, चिकित्सकीय सभी कार्यों में हमेशा संलग्न रखना चाहिए। उसके अनुसार राजा यदि अपने कर्त्तव्य का पालन नहीं करता है तो व्यक्ति उसे जन–धन की सहायता बन्द कर नूतन राजा का चयन करेंगे। इस प्रकार कौटिल्य के राजा के कार्यों का वर्णन वर्तमान के कल्याणकारी राज्य का प्रेरणास्रोत हैं। राजा की शिक्षा और उसके आत्म–संयम को उसने सफलता का मूल मन्त्र माना है। कौटिल्य के अनुसार राजा को काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर नामक छः मानसिक शत्रुओं से दूर रहना चाहिए। कौटिल्य द्वारा राजा में सभी शक्तियाँ सन्निहित की गई है, जिससे वह निरंकुश प्रतीत होता है, किन्तु वास्तविकता में कर्त्तव्यपालन से विमुख राजा के विरुद्ध जनता का विद्रोह का अधिकार, मन्त्रिपरिषद् का नियन्त्रण एवं राजतिलक के समय ली गई शपथ उसे निरंकुश होने से रोकते हैं। प्राचीन काल में व्यक्ति का जीवन धर्म से विनियमित था, अतः राजा से धर्मविरुद्ध आचरण की अपेक्षा नहीं की जा सकती।

सप्तांग सिद्धान्त के अन्तर्गत द्वितीय अंग अमात्य या मन्त्रिपरिषद् का था, अमात्य की नियुक्ति, योग्यता, वेतन, विभाग, संख्या, क्षमता, कार्यकुशलता एवं मन्त्रिपरिषद् की कार्यप्रणाली एवं गोपनीयता पर कौटिल्य द्वारा विस्तृत प्रकाश डाला गया है। गुण और योग्यता के आधार पर कौटिल्य

ने अमात्यों को तीन श्रेणियों में विभाजित किया है– उत्तम अमात्य, मध्यम अमात्य, क्षुद्र अमात्य। मन्त्रिपरिषद् के प्रमुख को प्रायः महामन्त्री कहा जाता था। जनपद राज्य का तीसरा महत्त्वपूर्ण अंग है। जनपद से कौटिल्य का तात्पर्य, दुर्ग से संरक्षित क्षेत्र, राज्य के ग्रामीण क्षेत्र तथा वहाँ निवासित जनसंख्या से हैं। राज्य का चतुर्थ अंग दुर्ग को कौटिल्य राज्य की सुदृढ़ता, सुरक्षा के लिए अति आवश्यक मानता है, उसके अनुसार यदि दुर्ग सुरक्षित नहीं तो राजकोष भी सुरक्षित नहीं रह सकता, यदि दुर्ग शक्तिशाली है तो कोषविहीन राजा को भी परास्त नहीं किया जा सकता। कौटिल्य द्वारा राज्य की सुरक्षार्थ चार प्रकार के दुर्ग का उल्लेख किया गया है– औदक दुर्ग, पर्वत दुर्ग, धात्वन दुर्ग एवं वन दुर्ग।

पंचम राज्य का अंग कोष है, कौटिल्य द्वारा कोषवृद्धि के लिए राजा से अपेक्षा की गई है कि वह बल प्रयोग अथवा अधर्म द्वारा जनता से कर ना प्राप्त करें। कौटिल्य के अनुसार– ''राजा जनता से कर प्राप्ति का कार्य उस माली के समान करे जो वृक्षों से फल तोड़ते समय इस बात का ध्यान रखता है कि वह सिर्फ पके फलों को ही तोड़े, न कि कच्चे फलों को।'' कौटिल्य द्वारा राजकोष में वृद्धि के लिए विभिन्न आधारों को विस्तृत रूप से विश्लेषित किया गया है।

कौटिल्य द्वारा राज्य के षष्ठ अंग दण्ड अथवा सेना को राज्य की सुरक्षा हेतु महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है, सेना के कौटिल्य द्वारा छः प्रकार बताये गये हैं– मूल सेना (राजधानी की सुरक्षा), भृत्य सेना (वेतनभोगी), श्रेणी सेना (विभिन्न राज्यों की सुरक्षा हेतु), मित्र सेना (मित्र राज्यों की सेना), शत्रु सेना (शत्रु राष्ट्रों की सेना), अटवी सेना (वनों की सुरक्षार्थ)। इसके अतिरिक्त राज्य की सुरक्षार्थ कौटिल्य द्वारा चतुरंगिणी सेना (हाथी, घोड़ा, रथ, पैदल) की आवश्यकता पर भी बल दिया गया है। राज्य का सप्तम अंग मित्र है– राज्य के संकट के समय राज्यों को मित्र राष्ट्रों की आवश्यकता होती है। कौटिल्य द्वारा तीन प्रकार के मित्र राष्ट्र बताये गये हैं– प्रथम प्राकृतिक मित्र (पड़ोसी राज्य का पड़ोसी राज्य), द्वितीय सहज मित्र (रक्त सम्बन्धी राज्य), तृतीय कृत्रिम मित्र (राज्य की शरण में आये राष्ट्र)।

राज्य की सुरक्षा, शत्रुओं की पहचान, प्रशासनिक व्यवस्था के निरीक्षण, दूसरे राज्यों में क्रान्ति करा सत्ता परिवर्तन हेतु, शत्रु राजा के वध, राजा की लोकप्रियता की रक्षा, विदेश नीति के निर्माण और संचालन, प्रजा की मनोवृत्ति जानने हेतु कौटिल्य ने देश के अन्दर और बाहर सुदृढ़ गुप्तचर व्यवस्था पर बल दिया है। गुप्तचर को नौ श्रेणियों में विभाजित किया है– कापटिक, उदास्थित, गृहपतिक, वैदेहक, तापस, सत्री, तीक्ष, रसद और भिक्षुक। गुप्तचरों द्वारा राज्य की सुरक्षार्थ संदेश भेजने के लिए वह सांकेतिक लिपि के प्रयोग पर बल देता है। उसके अनुसार 'मन्त्र भेदो ह्ययोग क्षेमकरः' तात्पर्य गुप्त मन्त्रणा के प्रकरण से राज्य का कुशलक्षेम नष्ट हो जाता है। कौटिल्य द्वारा गुप्तचरों की नियुक्ति के लिए योग्यता, उनकी कार्यप्रणाली पर भी विस्तृत प्रकाश डाला गया है।

राज्य की सुरक्षा और विदेश नीति से सम्बन्धित मण्डल सिद्धान्त कौटिल्य की राजनय के सिद्धान्त के क्षेत्र में एक अद्वितीय देन है, जिसमें यह निर्देशित है कि एक विशेष राज्य के कौन मित्र हो सकते हैं और कौन शत्रु जिससे कि परराष्ट्र नीति निर्माण और शक्ति संतुलन स्थापित करने में सहायता मिल सके। उसके द्वारा बारह राज्यों का समूह निर्धारित किया गया जो राज्यमण्डल कहलाता है। कौटिल्य का उद्देश्य समकालीन भारत के छोटे–छोटे राज्यों में विभक्त राज्यों को मिलाकर एक सुदृढ़, शक्तिशाली, विशाल राज्य की स्थापना करने का था, जिसके शासक को उन्होंने 'विजिगीषु' की संज्ञा दी, उसका मत था कि विजिगीषु को राज्य के विस्तार, शक्ति, सम्मान, यश वृद्धि के लिए, युद्ध

के लिए हमेशा तत्पर रहना चाहिए, उसमें शत्रु और मित्र को पहचानने की शक्ति होनी चाहिए। कौटिल्य द्वारा वर्णित राज्यमण्डल सिद्धान्त भौगोलिक स्थिति के आधार पर राज्यों के मध्य सम्बन्धों को निर्धारित करता है। राज्य के पास लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए तीन प्रमुख शक्तियों की अपेक्षा कौटिल्य द्वारा की गयी है– मन्त्र शक्ति (विजिगीषु का ज्ञान, कौशल), प्रभुशक्ति (कोष एवं सैन्य बल), उत्साह शक्ति (पराक्रम, साहस, मनोबल), जिनका समन्वय करके राज्य अपनी लक्ष्यसिद्धि कर सकता है।

कौटिल्य की विदेश नीति–निर्धारण और राज्य शिल्प नीति का आधार भौगोलिक और आर्थिक है। कौटिल्य की कूटनीति चार साधनों– साम, दाम, दण्ड, भेद पर आधारित है। निर्बल राजा के लिए साम एवं दाम व शक्तिशाली राजा के लिए दण्ड एवं भेद की नीति का प्रयोग लाभकारी बताया गया है। इस प्रकार कौटिल्य राज्य की अभिवृद्धि के लक्ष्यप्राप्ति के लिए राजनीति को नैतिक बन्धनों से पृथक रखते हैं।

कौटिल्य द्वारा विदेश नीति के संचालन के लिए छः गुणों (षड्गुण्य नीति), सन्धि (शान्ति स्थापित करने के लिए), विग्रह (शत्रु राष्ट्र की अपकार में संलग्नकता को पहचानकर युद्ध का निर्णय), यान (युद्ध की घोषणा से पूर्व युद्ध की तैयारी), आसन (तटस्थ रहकर परिस्थितियों का आंकलन), सश्रय (शक्तिशाली राजा का संरक्षण), द्वैधीभाव (एक राजा से सन्धि कर दूसरे से युद्ध का निर्णय) को आधार बताया है।

कौटिल्य राजा को स्वयं के शक्तिशाली हो जाने के पश्चात् पुरानी शान्ति सन्धि तोड़, स्वयं की शक्ति अनुरूप नई नीति–निर्माण की सलाह भी देता है। इसके अतिरिक्त विजेता राष्ट्र को पराजित राष्ट्र संस्कृति को अपनाने और उसमें हस्तक्षेप न करने की भी सलाह देता है। विदेश नीति के संचालन के लिए राजदूतों की भूमिका को भी उसने स्वीकार किया है। कौटिल्य द्वारा राजदूतों के तीन प्रकार बताये गये हैं– प्रथम स्वयं विवेक द्वारा राजा के पक्ष से निर्णय लेने में समर्थ, द्वितीय सीमित शक्ति वाले जो विशिष्ट उद्देश्य की पूर्ति तक सीमित हैं, तृतीय केवल संदेशवाहक की भूमिका में होंगे। इसके अतिरिक्त राजदूत के कार्यों में दूसरे राज्यों के जनमत व सैन्य शक्ति का आंकलन, सन्धिपालन का निरीक्षण, गुप्त सूचना प्राप्त करना, राज्य में विभाजन के बीज बोना आदि हैं।

राजनीतिक विचार मंथन श्रृंखला में कौटिल्य और मैकियावली को समान विचारों के आधार पर समतुल्य माना जाता है। निकोलो मैकियावली का जन्म इटली के फ्लोरेंस नगर में सन् 1469 को एक सामान्य परिवार में हुआ। इस प्रकार समयकाल को लेकर कौटिल्य और मैकियावली के मध्य लगभग 1400 वर्षों का अन्तर है। मैकियावली के द्वारा फ्रांस, रोम, बर्लिन आदि में राजदूत के रूप में व सन् 1498 और 1512 के मध्य फ्लोरेंस की 'काउन्सिल ऑफ टेन' के रूप में कार्य किया गया। एक संगठित सुदृढ़ इटली का स्वप्न लिये सन् 1527 में उनका देहावसान हुआ, उनके स्वप्न को उनके विचारों से प्रेरित मेजनी एवं काबूर ने पूर्ण किया। प्रमुख रचनाएँ 'दि प्रिन्स', 'द डिसकोर्स', 'द आर्ट ऑफ वार' हैं।

प्रमुख राजशास्त्री डनिंग ने मैकियावली के बारे में कहा है कि ''यह प्रतिभा सम्पन्न फ्लोरेंस निवासी वास्तविक अर्थ में अपने काल का शिशु था।'' (डनिंग, हिस्ट्री ऑफ पालिटिकल थॉट 1953, पृ0 285) क्योंकि उनका दर्शन समकालीन परिस्थिति से प्रभावित था, अपने राजनयिक प्रतिनिधित्व काल में उन्होंने अनेक देशों में निरंकुश तन्त्र की सफलता को देखा था। राजनीतिक विभाजन व पारस्परिक संघर्ष की स्थिति से उत्पन्न इटली की चिन्ताजनक स्थिति को दूर करने के लिए उन्होंने निरंकुश शासन–तन्त्र का समर्थन किया, इटली के निवासियों के चारित्रिक गुणों के पतन के कारण

भी वह निरंकुश शासन के समर्थक बने। मैकियावली के विचार में गणतन्त्रीय शासन व्यवस्था सच्चरित्र लोगों के राष्ट्र के लिए उपयुक्त है परन्तु जिस देश के लोग नितान्त लालची, स्वार्थी एवं धूर्त हों, उस देश के लिए राजतन्त्र (निरंकुश शासन) ही उपयुक्त शासन प्रणाली है। तत्कालीन समय में चर्च के एकाधिकार की समाप्ति के कारण उनके विचारदर्शन में धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण के भी दर्शन होते हैं। वह राजनीति को शक्ति के उपार्जन, परिरक्षण और प्रसार का अस्त्र मानता है, यहाँ वह कौटिल्य की दण्डनीति का सहोदर है। आधुनिक राष्ट्रराज्य का विचार प्रस्तुत करने के कारण उन्हें आधुनिक युग का जनक भी माना जाता है, चूँकि उसने इटली के एकीकरण के लिए एक राष्ट्र–एक राज्य का सिद्धान्त रखा।

मैकियावली के अनुसार मानव का स्वभाव प्रकृति से ही बुरा होता है। इस विषय में 'प्रिन्स' में उसने उल्लेख किया है– ''सामान्यतः मनुष्यों के बारे में यह कहा जा सकता है कि वे कृतघ्न, चलायमान, मिथ्यावादी, डरपोक और स्वार्थलिप्सु होते हैं, वे तभी तक आपके बने रहते हैं जब तक कि सफलता आपके पास है। भय, शक्ति, अभिमान और स्वार्थ उसके प्रेरणास्रोत हैं। मैकियावली का मानव स्वभाव के विषय में कथन कि व्यक्ति पिता की मृत्यु का दुःख आसानी से भूल जाते हैं, लेकिन पितृधन की हानि नहीं भूलते, अत्यधिक प्रसिद्ध है। मानव प्रकृति के इसी स्वभाव के कारण मैकियावली राजा से अपेक्षा करता है कि शासक को व्यक्ति की सम्पत्ति और जीवन की सुरक्षा के प्रति पूर्ण सचेत रहना चाहिए।

मैकियावली ने धर्म और राजनीति के अलगाव का समर्थन किया है क्योंकि वह धर्म को पारलौकिक विषय से सम्बन्धित मानता था, यह भीरु लोगों के लिए है, राजा से इसका कोई सम्बन्ध नहीं है। शासक को वह किसी बन्धन में नहीं बाँधता है, लक्ष्य की प्राप्ति ही उसका उद्देश्य है, चाहे इसके लिए नैतिक साधन प्रयुक्त हो अथवा अनैतिक। राजा को राज्य की सुरक्षा की चिन्ता करनी चाहिए, साधन तो हमेशा आदरणीय ही माने जायेंगे। राजा को 'व्याघ्र लोमड़ी' की नीति का पालन करना चाहिए, वह शेर की तरह शक्तिशाली और लोमड़ी की तरह चालाक होना चाहिए। मैकियावली ने लिखा है कि जब राज्य का जीवन संकट में हो तो राजाओं और गणराज्यों की रक्षा हेतु उसे विश्वासघात तथा कृतघ्नता का प्रदर्शन करना चाहिए। इस प्रकार मैकियावली द्वारा राज्य के ऊपर धर्म और नैतिकता को आरोपित नहीं किया गया है, अपितु धर्म और नैतिकता को राज्य की आवश्यकतानुसार अनुगमन करने को कहा है, राष्ट्र संकट के समय नैतिकता का कोई मूल्य नहीं है। जनता की नैतिकता इसी में है कि वह राजाज्ञा का पालन करे।

राज्य को मैकियावली ने मानवीय कृति माना है जिसे मनुष्यों ने स्वयं की असुविधाओं को दूर करने के लिए समाज हित में निर्मित किया है। स्वरूप के आधार पर मैकियावली राज्यों को दो भागों में विभाजित करता है– स्वस्थ राज्य (निरन्तर गतिशील), अस्वस्थ राज्य (गतिहीन)। मैकियावली द्वारा राज्य एवं शासन में विभेद नहीं किया गया है। उसने छः प्रकार के शासन तन्त्र बताये हैं– राजतन्त्र, अभिजाततन्त्र, निरंकुश तन्त्र, कुलीन तन्त्र, भीड़तन्त्र या लोकतन्त्र, लेकिन दो ही प्रकार के शासन तन्त्र का मैकियावली ने विशेष विश्लेषण किया है। अपनी पुस्तक 'द डिसकोर्स' में उसने गणतन्त्र को राजतन्त्र से श्रेष्ठ शासन माना है लेकिन यह उन्हीं देशों में सफल हो सकता है जहाँ नागरिकों के मध्य धन एवं सम्पत्ति की समानता हो व जनता सार्वजनिक रूप से पूर्ण संगठित हो, साथ ही नैतिक एवं धर्मपरायण हो। कुलीन तन्त्र से वह घृणा करता है क्योंकि इस शासन व्यवस्था में शासक वर्ग अपने स्वार्थपूर्ति के लिए सार्वजनिक हितों की उपेक्षा करते हैं।

राजा के कर्त्तव्यों और गुणों का उल्लेख भी मैकियावली के द्वारा विस्तृत रूप से किया गया है, उसका विचार था कि राजा को सभी प्रकार के गुणों से सम्पन्न, प्रजा के साथ व्यवहार कुशल, शेर के समान शक्तिशाली, लोमड़ी के समान चालाक, बहुरूपिया, दयालु होते हुए भी सतर्क ताकि उसका लाभ न उठाया जा सके, उसे नये राज्यों के लिए क्रूर, लाभ प्राप्ति तक ही वचनबद्ध, प्रजा के स्नेह प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील, प्रजा के ध्यान को भ्रमित करने वाला, मन्त्रिचयन में सतर्क, युद्ध का नेतृत्व करने वाला होना चाहिए। राजा को अप्रिय कार्यों का संचालन अपने अधिकारियों द्वारा कराना चाहिए, साथ ही राजा को प्रजा के व्यक्तिगत जीवन, साहित्य, संस्कृति, व्यक्तिगत स्वतन्त्रता में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए अन्यथा वह प्रजा की घृणा का पात्र हो सकता है। राजा को प्रजा पर राजस्व का अधिक भार नहीं डालना चाहिए, उसे भाड़े के सिपाहियों पर निर्भर न रहकर, स्वयं की सेना रखनी चाहिए। वह फ्रांस के सेना के राष्ट्रीयकरण से प्रभावित था। राजा को साम्राज्य विस्तार के लिए सदैव प्रयत्नशील होना चाहिए एवं विजित राज्यों की समुचित सुरक्षा का प्रबन्ध करने के लिए साम, दाम, दण्ड, भेद सभी नीतियों का प्रयोग कर उन्हें अपने उपनिवेश बना लेना चाहिए। राजा को प्रजा की कायरता को दूर करने के उपाय करने चाहिए, उसे नये राज्य पर नियन्त्रण करने के लिए अत्याचार और क्रूरता एक बार में ही कर लेने चाहिए, बार–बार करने से उसकी छवि उत्तम नहीं बनेगी, साथ ही विद्रोह की सम्भावना में भी वृद्धि होगी।

मैकियावली द्वारा सम्प्रभुता शब्द का प्रयोग नहीं किया गया है। कानून निर्मित करने की शक्ति राज्य में निहित हो, जो राज्य की सामाजिक, सांस्कृतिक व राजनीतिक परम्पराओं के अनुरूप हो, उसके अनुसार विधियों में प्राकृतिक एवं दैवीय कानूनों का कोई स्थान नहीं होना चाहिए। अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में मैकियावली राष्ट्रों की सीमित सम्प्रभुता के विचार को स्वीकार करता है।

कौटिल्य और मैकियावली के विचारों के संक्षिप्त विश्लेषण उपरान्त दोनों के विचारों की साम्यता और असाम्यता का विवेचन अवलोकनार्थ हैः–

कौटिल्य द्वारा रचित ग्रन्थ 'अर्थशास्त्र', राजनीतिक तथा मानव जीवन के प्रत्येक पक्ष से सम्बद्ध एक विश्वप्रसिद्ध कृति है जबकि मैकियावली की पुस्तक 'प्रिन्स' केवल राजनीति से सम्बन्धित विषयों पर भी प्रकाश डालती है। 'अर्थशास्त्र' की रचना कौटिल्य द्वारा अपने महान् लक्ष्य की प्राप्ति मौर्य साम्राज्य की स्थापना के पश्चात् की, जबकि मैकियावली की 'प्रिन्स' का रचनाकाल उसके जीवन का निराशाजनक समय था। कौटिल्य अपने लक्ष्य प्राप्ति के पश्चात् मौर्य साम्राज्य के महामन्त्री के पद पर आसीन रहे। मैकियावली भी अपने जीवन के पूर्वार्द्ध में फ्लोरेंस के 'काउन्सिल ऑफ टेन' के सचिव एवं यूरोप के अनेक देशों में राजदूत के पद पर कार्यरत रहे। दोनों विचारकों ने अपने ग्रन्थों की रचना अपनी समकालीन परिस्थितियों और देश के अनुभवों के आधार पर रचित की। कौटिल्य की मौर्य साम्राज्य की स्थापना व संरक्षण में महत्त्वपूर्ण भूमिका रही, मौर्य साम्राज्य के संस्थापक चन्द्रगुप्त मौर्य पर उनका प्रभाव पूर्ण रूप से था। उनके द्वारा स्थापित मौर्य साम्राज्य केवल मगध साम्राज्य तक ही सीमित नहीं था, अपितु उसकी सीमाएँ पंजाब, सिन्धु, उत्तर–पश्चिमी प्रदेश, अफगानिस्तान तक विस्तारित थी। यूनानी आक्रमणकारी सिकन्दर के सेनापति सेल्यूकस को पराजित कर उन्होंने भारत के अनेक राजाओं की हार का प्रतिकार लेकर सम्पूर्ण भारत में एक राजनीतिक सत्ता स्थापित की, इसके विपरीत मैकियावली को अपने जीवनकाल में बहुत बड़ी सफलताएँ नहीं मिलीं। उनका इटली के एकीकरण का स्वप्न उनके जीवनकाल में पूर्ण न हो सका। देशकाल की

दृष्टि से भी कौटिल्य और मैकियावली में लगभग 1400 वर्षों का अन्तर है। दोनों विचारक अपने वैचारिक दृष्टिकोण में इतिहास से प्रेरणा लेने पर बल देते हैं। कौटिल्य द्वारा अपनी तर्क की सिद्धि के लिए पूर्व के अनेक प्रकरणों के उद्धरण दिये गये हैं, वहीं मैकियावली भी अपनी मान्यताओं की पुष्टि के लिए रोम के प्राचीन इतिहास का वर्णन करता है। इसी के साथ दोनों विचारक अपने–अपने देश में विदेशियों के प्रभाव से मुक्ति के लिए प्रयत्नशील रहे।

वैचारिक दृष्टिकोण से कौटिल्य और मैकियावली में कुछ साम्यतायें हैं। राज्य की उत्पत्ति को लेकर दोनों इस विचार पर एकमत हैं कि राज्य कोई दैवीय संस्था नहीं है अपितु मानवकृत संस्था है जिसे व्यक्तियों ने अपनी असुविधाओं को दूर करने के लिए निर्मित किया है। दोनों विचारक राष्ट्र को सर्वोच्च मानते हैं, उनके अनुसार राष्ट्र स्वयं में एक उद्देश्य है। दोनों कट्टर राष्ट्रवादी हैं, राज्य की एकता, एकीकरण एवं राज्य की विस्तारवादी नीति के समर्थक थे। राज्य की अभिवृद्धि और उन्नति के लिए दोनों दूसरे राज्य को हानि पहुँचाने की नीति का भी समर्थन करते हैं। मैकियावली का उद्देश्य जहाँ राज्य की सुरक्षा को बनाये रखना है, वहीं कौटिल्य का उद्देश्य अत्यन्त व्यापक है, वह राज्य व्यवस्थापन के साथ–साथ शासन–व्यवस्था का भी प्रतिपादन करता है।

मैकियावली और कौटिल्य द्वारा राजतन्त्रीय व्यवस्था का समर्थन किया गया है। दोनों ने अपने चिन्तन में राजा को बहुत अधिक महत्त्व दिया है। वह वीर पूजक थे एवं दोनों के आदर्श विश्वविजेता थे। कौटिल्य ने राजा को धर्म एवं विधि अनुसार शासन करने और उसके स्वयं को उच्च नैतिक गुणों को धारण करने पर बल दिया है जबकि मैकियावली अपने राजा को किन्हीं आदर्शों एवं नैतिक बन्धन में नहीं बाँधता है। मैकियावली द्वारा राजा का सबसे बड़ा गुण चालाकी और धूर्तता बताया गया है।

मैकियावली की दृष्टि में साध्य तक पहुँचने के लिए सभी नैतिक और अनैतिक साधनों का प्रयोग समुचित है। साध्य प्राप्ति के लिए साधनों की नैतिकता या अनैतिकता का विशेष महत्त्व नहीं है। मैकियावली का मत है कि साधन यदि शक्ति प्राप्ति, उसके संरक्षण और शक्ति विस्तार में सहायक है तो इन्हें प्रयुक्त करना उपयुक्त है, चाहे वह प्रचलित धार्मिक एवं नैतिक प्रतिमान के अनुरूप है या नहीं, राज्यहित नैतिक सिद्धान्त से उच्च है। इसके विपरीत साधनों के दृष्टिकोण में कौटिल्य ने आपद धर्म के सिद्धान्त को स्वीकार किया है जिसमें केवल आपत्ति के समय में ही नैतिक नियमों की अवहेलना की छूट राजा को दी गई है, शान्तिकाल और सामान्य व्यवहार में वह राजा से सच्चरित्रता की अपेक्षा करता है। 'अर्थशास्त्र' में कौटिल्य युद्ध में पराजित राजा का पराभव विष आदि साधनों द्वारा भी उचित मानता है। कौटिल्य नीति का मुख्य बिन्दु 'आत्मोदय परग्लानि' अर्थात् दूसरों की हानि करके अपना हितसंवर्धन करना है। मैकियावली भी दूसरे राज्यों का अहित कर अपने राज्य का विस्तार चाहते हैं, चाहे इसके लिए कितना भी जन–धन व्यय करना पड़े, शत्रु विनाश अवश्यम्भावी है।

धर्म के सम्बन्ध में कौटिल्य ने 'अर्थशास्त्र' में लिखा हैः–

तस्मात् स्वधर्म भूतानां राजा न व्यभिचारयेत्।

स्वधर्म सन्द धानो हि, प्रेत्य चेह न नन्दति।।

–अर्थशास्त्र, 1/3

अर्थात् राजा प्रजा को अपने धर्म से च्युत न होने दे, राजा भी अपने धर्म का पालन करे। जो राजा अपने धर्म का पालन इस भाँति से करता है, वह इस लोक और परलोक में सुखी रहता है। इसके विपरीत मैकियावली द्वारा धर्म को राजनीति से

पृथक् रखा गया है, उसके अनुसार धर्म कायरों का अस्त्र है, राजा से इसका कोई सम्बन्ध नहीं है।

कौटिल्य और मैकियावली के राजनीतिक विचारों के तुलनात्मक अध्ययन उपरान्त निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि राज्य स्थापन, राज्य की उत्पत्ति, राज्य की प्रकृति, राज्य की एकता, राज्य शक्ति के उपार्जन, संरक्षण और विस्तार से सम्बन्धित विषय पर दोनों विचारक लगभग समान दृष्टिकोण रखते हैं। राज्य की सुरक्षा और विस्तार से सम्बन्धित लक्ष्यों की पूर्ति के लिए वह साम, दाम, दण्ड, भेद सभी नीतियों के प्रयोग पर बल देते हैं, लेकिन धर्म की जो अवहेलना मैकियावली द्वारा की गई, वह कौटिल्य द्वारा नहीं की गयी है। कौटिल्य द्वारा राजा को धर्मानुसार आचरण करने एवं राज्य कार्य को भी धर्म के अनुसार संचालित करने की मान्यता प्रदान की गई है। कौटिल्य का दर्शन व्यवहारिकता पर आधारित है। वह आधुनिक कल्याणकारी राज्य का प्रतिपादक है। वह व्यक्ति हितों को राज्य को साध्य मानते हुए भी राज्य में समाहित नहीं करता है। कौटिल्य के विदेश नीति, राज्य एवं शासन कला से सम्बन्धित विचार वर्तमान में भी विश्व का मार्गदर्शन कर रहे हैं।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि कौटिल्य, मैकियावली से अधिक विवेकशील और दूरदर्शी थे, उन्होंने अपने लक्ष्य की पूर्ति अपने जीवनकाल में ही महान् मौर्य साम्राज्य की स्थापना कर की। कौटिल्य द्वारा रचित 'अर्थशास्त्र' एक सर्वांगीण, सार्वदेशिक, सार्वकालिक रचना है जो मानव जीवन के प्रत्येक पक्ष से सम्बन्धित है जबकि मैकियावली ने स्वयं को राज्य स्थापना तक ही सीमित रखा है। कौटिल्य का अनुभव, उसका मानव जीवन का अध्ययन एवं ज्ञान मैकियावली की तुलना में बहुत अधिक गहन, सूक्ष्म और विस्तृत है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. अलतेकर प्रो0 अनंत सदाशिव, प्राचीन भारतीय शासन पद्धति, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2014
2. गाबा ओ0पी0, भारतीय राजनीतिक विचारक, मयूर पेपर बैक्स, नई दिल्ली, 2017
3. गाबा ओ0पी0, पाश्चात्य राजनीतिक विचारक, मयूर पेपर बैक्स, नोएडा, 2011
4. पाण्डेय डॉ0 श्यामलाल, भारतीय राजशास्त्र प्रणेता, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, 1989
5. फोस्टर एम0वी0, मास्टर्स ऑफ पालिटिकल थॉट, जार्ज ए हारपर एण्ड कम्पनी, लन्दन, 1963
6. वर्मा विश्वनाथ, पाश्चात्य राजनीतिक विचारधारा का इतिहास, हिन्दी समिति, लखनऊ, 1964
7. वर्मा डॉ0 वी0पी0, आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा, 2010–11
8. शास्त्री आर0 शाम, कौटिल्य अर्थशास्त्र, मैसूर प्रिन्टिंग पब्लिशिंग हाउस, 1967
9. सेवाइन जी0एच0 (अनु0), विश्वप्रकाश गुप्त, एस0चन्द एण्ड कम्पनी लि0, नई दिल्ली, 1977
10. Singh Sukhbir, History of Political Thought, Rastogi Publication, Meerut, 2017